प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा. कल्पना जयसिंगराव साळुंखे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध - प्रबंध "'रहीम सतसई:' विवेचनात्मक अध्ययन" मेरे निर्देशन में सफलता पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। प्रा. कल्पना जयसिंगराव साळुंखे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारेमें मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। सम्पूर्ण लघु - शोध - प्रबंध को आरंभ से अंत तक पढकर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

31-5-91

(प्रा. शरद कणबरकर)
शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

दिनांक : 31-5-91

प्रख्यापन

मैंने "'रहीम सतसई': विवेचनात्मक अध्ययन" यह लघु-शोध-प्रबंध प्रा. शरद कणबरकरजी के निर्देश में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया है। मेरा यह शोध-कार्य मौलिक है। यह लघु-शोध-प्रबंध अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया है।

Salokhe

(प्रा. कल्पना जयसिंगराव साळुंखे)
शोधछात्रा
देवचंद कॉलेज, अर्जुननगर
जि. कोल्हापुर

दिनांक : ३१/५/८१
कोल्हापुर

अनुक्रमणिका

अ. नं.		पृष्ठ क्रमांक
१)	प्राक्कथन	- -
२)	प्रथम अध्याय	१ - १५
३)	द्वितीय अध्याय	१६ - २४
४)	तृतीय अध्याय	२५ - ३४
५)	चतुर्थ अध्याय	३५ - ७५
६)	पाँचवा अध्याय	७६ - १३०
७)	उपसंहार	१३१ - १३८
८)	संदर्भ ग्रंथ सूची -	१४० - १४२

प्राक्कथन

रहीम भक्तिकाल के नीति - कवि हैं। हम भारतीय संस्कृति एवं चिंतन के अविरल प्रवाह पर ध्यान दें तो अनुभव करेंगे कि प्राक् ऐतिहासिक काल से संस्कृति, चिंतन, अनुभूति तथा धार्मिक और नैतिक मान्यताओं को समेटने का कार्य हिन्दी साहित्य बराबर करता चला आ रहा है। इसमें योगदान करनेवालों में रहीम की अपनी अलग पहचान है।

रहीम अपने समय के वीर योध्दा, कुशल राजनीतिज्ञ और भारतीय सांस्कृतिक समन्वय का आदर्श प्रस्तुत करनेवाले मार्मिक कवि थे। यही कारण है कि उनका काव्य हमारें हृदय की भावभूमि को पुलकित करते हुए हमारे विचारों को जागृत करता है। रहीम की " रहीम सतसई" इस क्षेत्र की सर्वाधिक प्रसिध्द रचना है।

मुझे बी. ए. और एम्. ए. की पढाई के दौरान रहीम जी को पढने का मौका मिला। तत्पश्चात एम्. फिल. के बहाने लघु - शोध प्रबंध के रूप में "रहीम सतसई" पर काम करने का मौका प्राप्त हुआ। "सतसई" का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होते ही मैंने " 'रहीम सतसई:' विवेचनात्मक अध्ययन" इस विषय कार्य करना निश्चित किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की प्रारंभिक अवस्था में कुछ प्रश्न मन में उठ खडे हुये, वे हैं -

१)रहीम ने भक्तिकाल में नीति - काव्य की रचना क्यों की ?

२) रहीम का नीतिकाव्य लिखने का उद्देश्य क्या है ?

३) रहीम का नीतिकाव्य कैसा है ?

४) रहीम ने अपने नीति के विचार समझाते हुए रामायण, महाभारत के उदाहरण क्यों दिये हैं?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैंने अपने " रहीम-सतसई: विवेचनात्मक अध्ययन" इस लघु शोध- प्रबंध में उपयुक्त प्रश्नों के उत्तर ढूँढ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में रहीम की जीवनी एवं साहित्य कृतियों पर संक्षेप में विचार किया गया है। रहीम का जन्म अकबर के काल में हुआ। रहीम अरबी, फारसी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के पंडित थे। साथ ही उन्होंने धर्म - ग्रंथों का अध्ययन किया था।

दूसरे अध्याय में मैंने रहीम - काल की परिस्थितियों का परिचय दिया है। रहीम का काल मुगल साम्राटों का काल था। इस अध्याय में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का विचार किया है।

तृतीय अध्याय में मैंने रहीम के नीतिकाव्य के मूल स्त्रोतों का विचार लिया है। इसमें रहीम के नीति - काव्य का प्राथमिक परिचय मिलता है।

चतुर्थ अध्याय में रहीम के नीतिकाव्य का सोदाहरण परिचय दिया है। रहीम ने अनेक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। इस अध्याय में रहीम के नीति के उदाहरणों का सच्चा स्वरूप देखने को मिलता है।

पाँचवें अध्याय में रहीम द्वारा प्रयोग में लाये गये भाषा, छन्द, अलंकार, शब्द - शक्ति आदि का परिचय मिलता है।

छठे अध्याय में उपसंहार है। यह प्रबंध के विषय का सार रूप है।

प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूचि दी है। साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है।

प्रस्तुत लघु – शोध – प्रबंध की मूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

प्रस्तुत लघु-शोध –प्रबंध श्रध्देय गुरूदेव प्रा. शरद कणबरकरजी के सूक्ष्म निरीक्षण और निर्देशन का फल है। वे सदा सृजन कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के साथ मुझे समय – समय पर मार्गदर्शन करते रहे। आपके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और विद्वत्तापूर्ण व्यासंग ने मेरे मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए पथ – प्रदर्शन किया। इसीलिए मैं आपकी सदैव ऋणी रहूँगी और यह आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा।

आदरणीय पूज्य गुरूवर्य डॉ. द्रविडजी, डॉ. व्ही.के. गोरेजी, प्रा. वेदपाठकजी, प्रा. रजनी भागवतजी, प्रा. तिवलेजी के प्रति भी सविनय आभार प्रकट करती हूँ। देवचंद कॉलेज के हिन्दी विभाग प्रमुख प्रा. पी. जी. शाह, डॉ. प्रा दड्डी, प्रा. जाधवजी की भी मैं आभारी हूँ।

अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देनेवाले और जिनके आशीर्वाद के बिना यह शोध कार्य असंभव है, वे मेरे पूज्य नाना-नानी, माता-पिता, स्नेहसागर श्री. बियाणीजी की भी आभारी हूँ। मेरे पति श्री. मोहन घाटगेजी का मुझे अच्छा सहयोग मिला। मेरे सहपाठी और सहेलियों की भी मैं आभारी हूँ।

अंत में इस शोध – प्रबंध को अतिशीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम करनेवाले श्री. चव्हाण और सौ. चव्हाण के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

इसके साथ ही मै अपना यह लघु-शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखती हूँ।

(प्रा. कल्पना जयसिंगराव ताळुखे)
शोधछात्रा

कोल्हापुर।
दिनांक : — ?